UGC Approved Journal No - 48728

ISSN 2249 - 8893

P.PUBLICATION

Annals of Multi-Disciplinary Research

A Quarterly International Peer Reviewed Refereed Research Journ

Chief Editor :
Dr. R.P.S. Yadav

Editor :
Dr. Sarvesh Kumar

UGC Approved Journal No – 48728
(IIJIF) Impact Factor - 5.034

ISSN 2249 - 8893

Annals of Multi-Disciplinary Research

A Quarterly International **Peer Reviewed** Refereed Research Journal

P. PUBLICATION

Volume 14 **Issue II** **June 2024**

Editor
Dr. Sarvesh Kumar
UPRTOU Allahabad

Chief Editor
Dr. R. P.S. Yadav
Incharge Director,
School of Humanities
UPRTOU Allahabad
www. annalsmdresearch.com

E-mail : annalsmdresearch@gmail.com www. annalsmdresearch.com

- वैश्वीकरण के युग में धार्मिक कट्टरता — 64-66
  डॉ. अनिल कुमार यादव, प्रवक्ता, समाजशास्त्र विभाग, रामराजी देवी महिला पी.जी. कॉलेज, सुराई सठियाँव, आजमगढ़।
- मध्य पाषाण कालीन मानवीय सभ्यता एक विश्लेषण : मध्य गंगा घाटी सभ्यता के संदर्भ में — 67-72
  श्यामली जायसवाल, शोधार्थिनी प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दीन दयाल उपाध्याय, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
  प्रो. कमलेश कुमार गौतम, प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दीन दयाल उपाध्याय, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
- योग दर्शन और जीवन-चक्र — 73-76
  संध्या कुमारी, असिस्टेंट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, ललित नारायण तिरहुत महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर
- भारतीय त्योहारों और उत्सवों में पर्यावरण संरक्षणः परंपरागत और आधुनिक प्रथाओं का अध्ययन — 77-81
  योगेन्द्र सिंह, प्रवक्ता-हिन्दी, हीरालाल रामनिवास इण्टर कालेज, खलीलाबाद-संत कबीर नगर
- पुराणों में प्रतिपादित विषय : एक ऐतिहासिक अनुशीलन — 82-83
  अशोक कुमार, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
- पर्यावरण अवनयन के प्रभाव का प्रबन्धन — 84-85
  डॉ. जितेन्द्र कुमार यादव, बाबू बसन्तलाल राजनरायण पी०जी० कालेज, कोटवा घिसाराम कलवारी, मीरजापुर।
- विमर्श के आईने में उत्तर-आधुनिकतावाद के सरोकार — 86-89
  यज्ञनाथ पाण्डेय, असि. प्रोफेसर, सकलडीहा पी.जी. कॉलेज, सकलडीहा।
- गोरखपुर जनपद से प्राप्त दुर्लभ मृण्-मूर्त्तियाँ — 90-92
  डॉ० सतीश चन्द यादव, वरिष्ठ शोध अध्येता महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ, देवास रोड, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
- कार्ल मार्क्स के दृष्टिकोण में सामाजिक न्याय में निहितार्थ मानव-कल्याण — 93-95
  डॉ. पूजा कुमारी, दर्शनशास्त्र विभाग, कोल्हान विश्वविद्यालय, चाईबासा।
- उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की मनो-जीवन का अध्ययन — 96-106
  डॉ. मनोज कुमार सिंह, सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र (पी0जी0) किशोरी लाल पी0जी0 कालेज, नैनी, प्रयागराज (उ0प्र0)।
- माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के दायित्वबोध तथा कक्षा शिक्षण व्यवहार में सम्बन्ध का अध्ययन — 107-112
  बृजलाल यादव, शोधार्थी, शिक्षा संकाय,राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर,उ0प्र0।
  डॉ. राजेश कुमार सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, उ0प्र0 सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर।
- भारत में पर्यावरण संरक्षण एवं कानून — 113-118
  डॉ. चन्दन मल शर्मा, सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, राजकीय महाविद्यालय, टोडाभीम, करौली, (राजस्थान) भारत।

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के दायित्वबोध तथा कक्षा शिक्षण व्यवहार में सम्बन्ध का अध्ययन

बृजलाल यादव*
डॉ. राजेश कुमार सिंह**

शिक्षा मानव विकास का आधारभूत साधन है जिसके द्वारा व्यक्ति में निहित दक्षताओं का विकास कर उसे उत्कृष्ट प्राणी के रूप में विकसित किया जाता है। शिक्षा की इस प्रक्रिया में औपचारिक एवं अनौपचारिक स्रोतों का प्रयोग किया जाता है। औपचारिक शिक्षा में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी जाती है। वह अपने शिक्षण कौशल एवं गुरुतर दायित्वबोध के आधार पर कक्षा शिक्षण एवं सहशैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करता है। औपचारिक शिक्षा के विभिन्न स्तरों में माध्यमिक स्तर को बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक एवं संवेगात्मक गुणों के विकास की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। अतः इस स्तर पर कार्यरत शिक्षकों का दायित्वबोध व कक्षा शिक्षण व्यवहार का सकारात्मक होना अपेक्षित रहता है। इसलिए माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के दायित्वबोध तथा कक्षा शिक्षण व्यवहार का अध्ययन किया जाना आवश्यक एवं उपयोगी है। अतः अध्ययनकर्ता द्वारा प्रस्तुत विषय को अध्ययन हेतु लिया इसके लिए जौनपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के 25 शिक्षक एवं 25 शिक्षिकाओं का चयन कर उनके दायित्वबोध एवं कक्षा शिक्षण व्यवहार में सम्बन्ध का अध्ययन किया गया जिसके लिए दायित्वबोध का ऑकलन करने हेतुडॉ0 शशिकान्त त्रिपाठी एवं डॉ0 कल्पलता पाण्डेय द्वारा निर्मित दायित्वबोध मापनी तथा कक्षा शिक्षण व्यवहार का ऑकलन करने हेतु फ्लैण्डर की कक्षा शिक्षण व्यवहार ऑकलन प्रपत्र का प्रयोग किया गया है। प्राप्त प्रक्रियाओं के विश्लेषण से यह प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के दायित्वबोध का स्तर समान है जबकि कक्षा शिक्षण व्यवहार में शिक्षिकाओं का कक्षा शिक्षण व्यवहार शिक्षकों से अधिक सकारात्मक है। माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के दायित्वबोध एवं कक्षा शिक्षण व्यवहार के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध होता है अर्थात् शिक्षकों में दायित्वबोध का स्तर उच्च होने पर उनका कक्षा शिक्षण व्यवहार अधिक अनुकूल रहता है जबकि दायित्वबोध के न्यून होने पर कक्षा शिक्षण व्यवहार अधिक सकारात्मक नहीं रहता है।

भूमिका :

शिक्षा एक त्रिध्रुवीय सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी एवं शैक्षिक पाठ्यक्रम सम्मलित होते हैं। वर्तमान शैक्षिक प्रक्रिया छात्र केन्द्रित है। सम्पूर्ण शैक्षिक आयोजन छात्र को केन्द्रित करके संचालित किया जाता हैं। इसमें शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील मार्गदर्शक के रूप में हो गयी है जो पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रम में छात्र की योग्यता, क्षमता एवं गति के अनुसार सीखने और अपेक्षित अधिगम परिणाम प्राप्त करने में छात्र की सहायता करता है। शिक्षा के आरम्भिक काल में शिक्षक केन्द्र में था और छात्र उसका अनुगामी होता था। अध्यापक के माध्यम से पढ़ाया कोई भी ज्ञान पाठ्यवस्तु था। बाद में इसको शिक्षक–शिक्षार्थी तक विस्तारित कर इसे द्विध्रुवीय प्रक्रिया कहा गया। वर्तमान में सीखे जाने वाले ज्ञान की उपयोगिता के कारण पाठ्यक्रम को भी अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाने लगा और इसको शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यक्रम तक विस्तारित करके इसे त्रिध्रुवीय कर दिया गया।

पठन–पाठन का काम आजीवन चलने वाली प्रक्रिया के रूप में होती है किन्तु यह औपचारिक रूप में एक निश्चित अवधि, पाठ्यक्रम एवं स्थान पर सम्पादित होती है। इस औपचारिक शिक्षा के

---

* शोधार्थी, शिक्षा संकाय,राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर,उ0प्र0।
** असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, उ0प्र0 सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर।

मुख्यतः तीन स्तर है– प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा। इसमें प्राथमिक शिक्षा को आधारभूत, माध्यमिक स्तर की शिक्षा को जीवन निर्माण एवं उच्च शिक्षा को तार्किक चिन्तन एवं दक्षता विकास के स्तर में विभाजित किया जाता है। प्राथमिक शिक्षा द्वारा मजबूत एवं स्थायी नींव का निर्माण होता है जिस पर आगे चलकर व्यक्ति के जीवन की सफलता, प्रगति एवं कुशलता का भव्य प्रासाद खड़ा होता है। शिक्षक इस भव्य प्रासाद का शिल्पी होता है जो अपने ज्ञान, अनुभव और शिक्षण कौशल से बालक का सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास करता है। किसी राष्ट्र की प्रगति, उसकी समृद्धि एवं उसकी सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने में माध्यमिक शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि शिक्षित राष्ट्र समृद्ध राष्ट्र का सूचक होता है इसलिए सर्वाधिक बल माध्यमिक पठन–पाठन को दिया जा रहा है क्योंकि इस स्तर पर बच्चों को ज्ञान के साथ–साथ नैतिक, चारित्रिक एवं व्यावसायिक रूप से सक्षम बनाने की प्रक्रिया सम्पादित की जाती है। इस स्तर की शिक्षा के बाद विद्यार्थियों का एक बड़ा समूह आजीविका हेतु आगे की शिक्षा नहीं ग्रहण कर पाता अतः उनमें विभिन्न गुणों का समावेश इसी स्तर पर करने की अपेक्षा होती है। शिक्षा की उपयोगिता बतलाते हुए **स्वामी विवेकानन्द** जी ने कहा था कि– मेरे विचार से सामान्य जन की साक्षरता की अवहेलना महान राष्ट्रीय पाप है और हमारे पतन के कारणों में से एक है। अतः शिक्षा प्रत्येक बालक को दिया जाना राष्ट्रीय प्रगति का मूलाधार है।

माध्यमिक शिक्षा की मजबूती पर ही राष्ट्र की प्रगति एवं समृद्धि निर्भर करती है। देश का आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक नेतृत्व करने वाले राजनेता, व्यवसायी एवं प्रशासक इस पठन–पाठन की गतिविधि से बनते हैं। अतः माध्यमिक शिक्षा की उपादेयता सबसे ज्यादा है। माध्यमिक शिक्षा के द्वारा बालक को समाज, राष्ट्र एवं वैयक्तिक जीवन में सफलता या असफलता की राह पर ले जाना सम्भव हो पाता है। वास्तव में शिक्षा एक राष्ट्रीय उत्तरदायित्व है। इसका सम्बन्ध बालक के भावी जीवन, राष्ट्र के भावी विकास एवं समाज की भावी स्थिति के निर्धारण से होता है। यदि भारतवर्ष को इक्कीसवीं सदी की चुनौतियों के अनुरूप समर्थ एवं सक्षम बनाना है तो माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा को सबके लिए अनिवार्य करना होगा। इस लक्ष्य की सम्प्राप्ति विभिन्न योजनाओं, प्रोत्साहनों एवं सामाजिक सहयोग से करने का प्रयास हो रहा है और इसमें पर्याप्त वृद्धि भी हुई है किन्तु अभी भी समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगों की माध्यमिक शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित करना चुनौतीपूर्ण बना हुआ है इसे दृष्टिगत रखते हुए वर्तमान शैक्षिक नीति में माध्यमिक स्कूलों में पढ़ाई की व्यवस्था को इस रूप में देने की पहल की गयी है ताकि इसके आगे की शिक्षा न प्राप्त करने पर भी बालक अपने भावी जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो सके तथा राष्ट्र की प्रगति में अपना योगदान सुनिश्चित कर सके। इस प्रकार की क्षमता विकास हेतु उपयोगी पाठ्यक्रम के साथ–साथ अपने दायित्वबोध के प्रति सजग रहने वाले, शिक्षण को प्रभावशाली तरीके से सम्पादित करने वाले तथा अपने उत्कृष्ट व्यवहार से विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति रूचि पैदा करने वाले अध्यापकों की आवश्यकता है।

शिक्षक को शैक्षिक व्यवस्था का प्रमुख निर्धारक माना जाता है। विशेषकर माध्यमिक शिक्षा में उसकी भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। वह बच्चों की मनोदशाओं को समझकर उसके अनुसार अपने शिक्षण को संचालित करने, उनमें विद्यालय के प्रति रूचि उत्पन्न करने, उन्हें अपने विशिष्ट व्यवहार से संतुष्ट रखने, उनकी मनोदशाओं का ऑकलन करने, उनके संवेगों का नियंत्रण करने तथा उनमें अपने जीवन के प्रति सकारात्मकता लाने की क्षमता सवंर्द्धित करता है। इसके लिए उसे स्वयं अनुकूल कक्षा शिक्षा व्यवहार अपनाते हुए विद्यार्थियों में भयमुक्त एवं आनन्ददायी भाव विकसित करना पड़ता है। ऐसा वह तभी कर सकता है जब उसमें इन चुनौतियों के प्रति दायित्वबोध हो, वह अपने शिक्षण व्यवसाय में प्रभावशाली गतिविधियों का अनुप्रयोग करता हो तथा उसका कक्षा शिक्षण व्यवहार विषयोचित होने के साथ–साथ विद्यार्थियों के मनोभावों के अनुरूप हो। माध्यमिक शिक्षा में नित नये प्रयोगों से यह संकेत मिलता है कि माध्यमिक स्कूलों की पढ़ाई–लिखाई की स्थिति सही नहीं है। इसका एक कारण अध्यापक का अपने उत्तरदायित्व का समुचित निर्वाह न कर पाना माना जा रहा है। इसके साथ ही उसका प्रभावशाली शिक्षण न होना, विद्यार्थियों में अरूचि पैदा करता है। शिक्षक का कक्षा शिक्षण व्यवहार भी विद्यार्थियों के लिए विशेष मायने रखता है क्योंकि उसके व्यवहार के सापेक्ष ही वह अध्ययन

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार की तुलना करना है। इसके लिए निर्मित परिकल्पना के सापेक्ष संकलित प्रदत्तों का विश्लेषण इस प्रकार है–

सारणी संख्या–2

माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार की तुलना

चर	N	M	S.D.	D	σD	t-ratio	सार्थकता
शिक्षक	25	452.80	17.40	19.85	5.05	3.93	0.05 स्तर पर सार्थक
शिक्षिका	25	472.65	18.30				

उक्त तालिकानुरूप माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार सम्बन्धी प्रतिक्रियाओं का माध्य 452.80 तथा प्रमाणिक विचलन 17.40 है तथा माध्यमिक स्तर के शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार सम्बन्धी प्रतिक्रियाओं का माध्य 472.65 व प्रमाणिक विचलन 18.30 है। प्राप्त टी–अनुपात 3.93 है जो 0.05 सार्थकता स्तर पर df48 के लिए टी–सारणीमान 2.63 से अधिक है जो सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर के शिक्षकों व शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है को अस्वीकृत कर दिया गया। चूंकि माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार सम्बन्धी प्रतिक्रियाओं का माध्य (472.65) माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के माध्य (452.80) से अधिक है। अतः माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं का कक्षा शिक्षण व्यवहार शिक्षकों से उच्च है। इसके कारणों में शिक्षिकाओं का विद्यार्थियों के साथ भावनात्मक रूप से अधिक जुड़ाव होना, उनमें कक्षा–कक्ष सम्बन्धी स्थितियों के प्रति अधिक सजगता व संवेदनशीलता रखना, शिक्षिकाओं की कार्यशैली एवं विद्यार्थियों के आशंकाओं का समुचित निराकरण एवं प्रभावी मार्गदर्शन करना, विद्यार्थियों की अनुक्रियाओं पर सकारात्मकता रखना तथा शिक्षक गतिविधियों का अनुक्रमिक संचालन करना आदि हो सकते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन का तृतीय उद्देश्य माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के दायित्वबोध व कक्षा शिक्षण व्यवहार में सम्बन्ध का अध्ययन करना है जिसके लिए निर्मित सह–सम्बन्धात्मक परिकल्पना के सापेक्ष संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण को निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

सारणी संख्या–3

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के दायित्वबोध व कक्षा शिक्षण व्यवहार में सम्बन्ध का अध्ययन

चर	N	ΣX	ΣX^2	ΣY	ΣY^2	ΣXY	r
दायित्वबोध कक्षा शिक्षण व्यवहार	50	3649	3240272	23137	14778380	14426913	0.13

विश्लेषण एवं व्याख्या :

उक्त तालिकानुरूप माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के दायित्वबोध के प्राप्तांकों का योग 3649 तथा उनके प्राप्तांकों के वर्गों का योग 3240272 है जबकि उनके कक्षा शिक्षण व्यवहार के प्राप्तांकों का योग 23137 तथा प्राप्तांकों के वर्गों का योग 14778380 है। माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के दायित्वबोध व कक्षा शिक्षण व्यवहार के प्राप्तांकों के गुणनफल का योग 14426913 है। प्राप्त सह–सम्बन्ध गुणांक 0.13 है जो धनात्मक सह–सम्बन्ध गुणांक की श्रेणी में आता है। जिससे यह ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के दायित्वबोध व कक्षा शिक्षण व्यवहार के मध्य धनात्मक सम्बन्ध होता है। अर्थात् दायित्वबोध का स्तर उच्च होने पर कक्षा शिक्षण व्यवहार अनुकूल रहता है जबकि दायित्वबोध का स्तर न्यून होने पर कक्षा शिक्षण व्यवहार प्रतिकूल हो जाता है। इसके कारणों में दायित्वबोध की स्थिति में शिक्षकों में विद्यालय, विद्यार्थियों, अभिभावकों व समाज के प्रति सकारात्मकता एवं सक्रियता रहती है जिसके कारण उनका कक्षा शिक्षण व्यवहार अनुकूल बना रहता है।

के प्रति अपनी मनोवृत्ति बनाता है। आज शिक्षकों पर सजगता, संलग्नता एवं औपचारिकता के रूप में उत्तरदायित्व का निर्वाह न कर पाने का आरोप लगाया जा रहा है। वर्तमान में माध्यमिक शिक्षकों के दायित्वबोध की स्थिति, उसकी शिक्षण प्रभावशीलता तथा कक्षा शिक्षण व्यवहार का ऑकलन करने हेतु प्रस्तुत विषय को शोध हेतु चयनित किया है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के दायित्वबोध की तुलना करना।
2. माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार की तुलना करना।
3. माध्यमिक स्तर के शिक्षक के दायित्वबोध एवं कक्षा शिक्षण व्यवहार में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं :

1. माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के दायित्वबोध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के शिक्षक के दायित्वबोध एवं कक्षा शिक्षण व्यवहार में कोई सम्बन्ध नहीं है।

अध्ययन विधि :

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक शोध के सर्वेक्षण प्रविधि पर आधारित है क्योंकि इसमें माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के दायित्वबोध एवं कक्षा शिक्षण व्यवहार का आकलन करने हेतु व्यक्तिगत सर्वेक्षण के द्वारा सूचनाएं संकलित की गयी हैं। प्रस्तुत अध्ययन हेतु जनसंख्या के रूप में जौनपुर जनपद में संचालित समस्त अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को लिया गया है। न्यादर्श के रूप में चार माध्यमिक विद्यालयों के 25 शिक्षक एवं 25 शिक्षिकाओं कुल 50 शिक्षकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श प्रतिचयन विधि से किया गया है। शोध उपकरण के रूप मेंडॉ0 शशिकान्त त्रिपाठी एवं डॉ0 कल्पलता पाण्डेय द्वारा निर्मित दायित्वबोध मापनी तथा कक्षा शिक्षण व्यवहार हेतु फ्लैण्डर कक्षा शिक्षण व्यवहार आकलन प्रपत्र का प्रयोग किया गया है। संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय गणना के रूप में माध्य, प्रमाणिक विचलन एवं टी–अनुपात का प्रयोग किया गया है।

गणना व विश्लेषण :

प्रस्तुत अध्ययन का प्रथम उद्देश्य माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के दायित्वबोध की तुलना करना है। इसके लिए निर्मित परिकल्पना के सापेक्ष संकलित प्रदत्तों का विश्लेषण इस प्रकार है–

सारणी संख्या–1

माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के दायित्वबोध की तुलना

चर	N	M	S.D.	D	σD	t-ratio	सार्थकता
शिक्षक	25	71.55	10.20	2.85	2.68	1.06	0.05 स्तर पर असार्थक
शिक्षिका	25	74.40	8.70				

उक्त तालिकानुरूप माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के दायित्वबोध सम्बन्धी प्रतिक्रियाओं का माध्य 71.55 तथा प्रमाणिक विचलन 10.20 है तथा माध्यमिक स्तर के शिक्षिकाओं के दायित्वबोध सम्बन्धी प्रतिक्रियाओं का माध्य 74.40 व प्रमाणिक विचलन 8.70 है। प्राप्त टी–अनुपात 1.06 है जो 0.05 सार्थकता स्तर परdf48 के लिए टी–सारणीमान 2.63 से कम है जो असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर के शिक्षकों व शिक्षिकाओं के दायित्वबोध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है को स्वीकृत कर लिया गया। अर्थात् माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के दायित्वबोध का स्तर समान है। इसके कारणों में उनकी शैक्षिक योग्यताओं में समानता, उनकी परिवेशीय दशाओं एवं संसाधनों की उपलब्धता की स्थिति में समानता, उन्हें अपने कार्य निष्पादन हेतु उपलब्ध अवसर एवं गतिविधियों के सम्पादन हेतु प्राप्त संसाधनों के अनुप्रयोग की स्थिति में समानता, उनके सामाजिक जुड़ाव एवं विद्यार्थियों तथा अभिभावकों के साथ सम्बन्धों की स्थिति में समानता आदि हैं।

निष्कर्ष :

1. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों व शिक्षिकाओं के दायित्वबोध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है को स्वीकृत कर लिया गया। अर्थात् माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के दायित्वबोध का स्तर समान है।
2. माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार सम्बन्धी प्रतिक्रियाओं का माध्य (472.65) माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के माध्य (452.80) से अधिक है। अतः माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं का कक्षा शिक्षण व्यवहार शिक्षकों से उच्च है।
3. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के दायित्वबोध व कक्षा शिक्षण व्यवहार के मध्य धनात्मक सम्बन्ध होता है। अर्थात् दायित्वबोध का स्तर उच्च होने पर कक्षा शिक्षण व्यवहार अनुकूल रहता है जबकि दायित्वबोध का स्तर न्यून होने पर कक्षा शिक्षण व्यवहार प्रतिकूल हो जाता है।

सन्दर्भ :

1. अग्रवाल, आर.एन. और अस्थाना (1987): "मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन" विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
2. गुप्ता, एस0पी0 (2008) : उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज.
3. सारस्वत, मालती (2004) : शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, आलोक प्रकाशन, लखनऊ.
4. सिंह, कर्ण (2004) : शिक्षा के नूतन आयाम, वसुन्धरा प्रकाशन, खीरी लखीमपुर
5. चौहान, एस0एस0 (2012) : एडवान्स एजुकेशनल साइकोलॉजी, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.
6. सिंह, अरूण कुमार (2006) : मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, पटना.
7. पाण्डेय, के0पी0 (2004) : शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी।

•••